P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं का अध्ययन

**विरेन्द्र सिंह**,
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

**कल्पना पारीक**
प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
एस.एस.जी.पारीक स्नातकोत्तर
शिक्षा महाविद्यालय,
जयपुर

**सारांश**

भारतीय संविधान में संवैधानिक और सांविधिक रूप से आरक्षण की व्यवस्था द्वारा समस्त आरक्षित वर्गों को विभिन्न अवसरों की उपलब्धता ने शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि के साथ–साथ उनके पिछड़ेपन में कमी की है। साथ ही इनकी वृत्तिक प्राथमिकताओं के प्रति दृष्टिकोण में भी अत्यधिक परिवर्तन मुखर हो रहा है। इसलिए इस स्थिति में विद्यार्थी की क्षमता तथा योग्यता का उचित मूल्यांकन कर उसे सही मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए उसकी वृत्ति तथा दृष्टिकोण का अध्ययन एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों के वृत्ति प्राथमिकता स्तर में समानता तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की तुलना में कमी पायी गयी।

**मुख्य शब्द :** आरक्षित वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, वृत्ति प्राथमिकता।

**प्रस्तावना**

वर्तमान शताब्दी ज्ञान के विकास में अपना अनूठा स्थान रखती है। वर्तमान और भविष्य की आकांक्षाओं के फलस्वरूप वृत्ति प्राथमिकता के विकास की प्रक्रिया के दौरान जहाँ काफी विकास हो रहा है, वहीं देश में नित नवीन समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं। इन समस्याओं से निपटने व उनका समुचित हल निकालने के लिए देश के वर्तमान और भावी नागरिकों में वृत्ति प्राथमिकताओं का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। अपनी भौतिकवादी जीवन वृत्ति को सफल बनाने के लिए व्यक्ति को अपने जीवन के प्रारम्भिक काल (स्कूली शिक्षा के समय) में अपनी 'मनोवृत्ति' को उसी के अनुसार विकसित करना होता है। यहाँ व्यक्ति की मनोवृत्ति उसे अपने जीवन के विशेष लक्ष्य जैसे–चिकित्सक, अधिकारी, अधिवक्ता तथा व्यवसायी आदि बनने की ओर अग्रसर करती है। अपने वांछित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह अपनी वृत्ति प्राथमिकताओं का निर्धारण कर अपने परिश्रम एवं लगन से उच्च जीवन–वृत्ति को प्राप्त करता है।

सभी व्यक्तियों में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ पाई जाती है, वे एक दूसरे से शारीरिक, मानसिक क्षमताओं, रूचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा आत्म सम्प्रत्यय के आधार पर भिन्न–भिन्न होते हैं। यहाँ हम विद्यार्थी की वृत्तिक प्राथमिकता से पहचान पाएँगे कि विद्यार्थी की किस क्षेत्र में वृत्ति अधिक है। इस प्रकार उस विद्यार्थी को उसी क्षेत्र में निर्देशन व प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करके उसका अधिकतम विकास करने का प्रयास कर सकें ताकि भविष्य में वह उस क्षेत्र में उच्च उपलब्धि प्राप्त कर सके।

**साहित्यावलोकन**

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम वृत्ति प्राथमिकताओं के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ जी.सी. (2012) : ''कॉलेज युवाओं की रोजगार आशाओं को प्रभावित करने वाले कारक/तत्व'' सें निष्कर्ष निकाला कि कॉलेज युवाओं की रोजगार आशाओं को प्रभावित करने वाले कारक – आर्थिक स्तर, माता–पिता की शैक्षिक योग्यताएँ, माता–पिता की रोजगार संबंधी योग्यताएँ, माता–पिता का रोजगार, जाति व लिंग है। एक इंसान का निवास स्थल उसके रोजगार संबंधी आशाओं को प्रभावित नहीं करता है। श्रीवास्तव, आर. (2008) : ''जाति और धर्म से सम्बनधित जीवनवृत्ति

ओरिएन्टेशन'' का अध्ययन किया और टिप्पणी की कि सामान्य और पिछड़ी जातियों में जीवनवृत्ति ओरिएन्टेशन में कोई भी महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं हैं, जबकि एस.सी/एस.टी जातियों में जीवनवृत्ति ओरिएन्टेशन स्तर सामान्य व पिछड़ी जातियों से कमजोर है। शर्मा, पूनम एवं कुमार, मुकेश (2007) : वैज्ञानिक, प्रशासकीय, अनुकरणीय और घर के पहलु में रोजगार रूचि वाले क्षेत्र पर ग्रामीण विद्यार्थियों में महत्त्वपूर्ण अन्तर की ओर इशारा किया और उन्होंने ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में साहित्यिक, औद्योगिक, निर्माण संबंधित, कलात्मक, कृषि संबंधी और सामाजिक रोजगार रूचि क्षेत्रों पर कोई भी महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया। लक्ष्मी, वी. (1996) : ''वंचित और अवंचित कॉलेज विद्यार्थियों की रूचि'' का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि अवंचित समूह के विद्यार्थी वैज्ञानिक, प्रशासकीय, अनुकरणीय और घर के पहलुओं में रोजगार रूचि वाले क्षेत्र हैं तथा ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में साहित्यिक, औद्योगिक, निर्माण संबंधी, कलात्मक, कृषि संबंधी और सामाजिक रोजगार संबंधित क्षेत्रों में कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं है। प्रधान, यादव, आर. के. (2000) : ''सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं युवाओं की रोजगार पसंदगी में संबंध'' में निष्कर्ष निकाला कि अधिकतर विद्यार्थी प्रशासकीय कार्य को पसंद करते हैं और कलात्मक कार्य व संगीत में सबसे कम रूचि दर्शाते हैं। किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं पर आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

**मुक्त ज्ञान कोष के अनुसार**

''कोई व्यक्ति जीवन की विभिन्न कालावधियों में जिस क्षेत्र में काम करता है उसी को उसकी आजीविका या वृत्ति या करिअर कहते है।''

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के ऐसे मोड़ पर खड़े होते हैं, जहाँ से अनेक रास्ते निकलते हैं। जिनके द्वारा वे आगे अनेक क्षेत्रों में जा सकते हैं। अतः ऐसे विद्यार्थियों को उनकी योग्यता व समय–सापेक्ष दृष्टिकोण के आधार पर सम्भावित सुधारात्मक सुझाव दिये जा सकते हैं। वृत्ति के चुनाव में व्यक्ति के सामाजिक परिवेश का भी प्रभाव पड़ता है साथ ही वृत्ति निर्देशन भी आवश्यक होता है, ताकि विद्यार्थी अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप अपने भावी जीवन के लिए उचित करियर की प्राप्ति हेतु तैयारी कर सकें। इसी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

**शोध का उद्देश्य**

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं का अध्ययन करना।

**शोध परिकल्पना**

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध विधि**

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

**शोध उपकरण**

सी.पी.आर : डॉ. विवके भार्गव व डॉ. (श्रीमती) राजश्री भार्गव

वृत्ति प्राथमिकताओं के मापन के लिए वृत्ति प्राथमिकता प्रपत्र (CPR) का निर्माण डॉ. विवके भार्गव व डॉ. (श्रीमती) राजश्री भार्गव द्वारा किया गया। इस रूचि प्रपत्र का विकास सन् 2001 में किया गया। इस सी.पी. आर को विकसित करने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों व युवकों को उनकी वृत्ति प्राथमिकताओं के लिए चयन का एक तरीका प्रदान करना था।

**शोध न्यादर्श**

शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में झुझुनूँ जिले के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 105 छात्रों को; 35 अनुसूचित जाति से, 35 अनुसूचित जनजाति से तथा 35 अन्य पिछड़ा वर्ग से, चुना गया जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

**शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि**

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

**शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी**

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. प्रसरण विश्लेषण अथवा ऐनोवा (एफ–मान)
6. क्रान्ति मान अथवा टी–मान

**परिकल्पना–1**

**उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

**सारणी संख्या – 1**

| चरिता के स्रोत Variation | स्वतंत्रता के अंश df | वर्गों का योग SS | मध्यमानों का वर्ग Ms | F |
|---|---|---|---|---|
| समूहों के मध्य Bg | 2 | 6475 | 3237.50 | 4.89* |
| समूहों के अन्तर्गत Wg | 102 | 67513 | 661.89 | |

*** 0.01 स्तर पर सार्थक**

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

**व्याख्या एवं विश्लेषण**

उपरोक्त तालिका अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों और उनकी वृत्ति प्राथमिकताओं के कुल आँकड़ों के मध्य बनी चरिता का एक–मार्गी विश्लेषण प्रदर्शित करती है।

यहाँ उपरोक्त तीनों समूहों के प्राप्तांकों के मध्यमानों से प्राप्त प्रसरण विश्लेषण (एफ) का मान 4.89 है जो कि समूहों के मध्य स्वतंत्रता के अंश 2 तथा समूहों के अन्तर्गत स्वतंत्रता के अंश 102 हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 4.82 से अधिक है, अतः तीनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः परिकल्पना–1 निरस्त की जाती है।

**परिकल्पना–1** '

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है', के निरस्त होने पर, यह ज्ञात करने के लिए कि यह अन्तर किन वर्गों के छात्रों के मध्यमानों में आया है, इस परिकल्पना की निम्न तीन उप–परिकल्पनाओं का निर्माण, विश्लेषण एवं व्याख्या की गयी–

**उप–परिकल्पना – 1.1**

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी संख्या – 2**

| छात्र | संख्या N | मध्यमान M | मानक विचलन SD | अन्तर की मानक त्रुटि $SE_D$ | मध्यमानों का अन्तर D | स्वतंत्रता के अंश df | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अनु. जाति | 35 | 30 | 27.05 | 6.51 | 3 | 68 | 0.46 |
| अनु. जनजाति | 35 | 33 | 27.38 | | | | |

**व्याख्या एवं विश्लेषण**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 30 व 33 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 27.05 व 27.38 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 6.51 है तथा मध्यमानों का अन्तर 3 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.46 है। जो कि स्वतंत्रता के अंश 68 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.00 से कम है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः उप–परिकल्पना – 1.1 को निरस्त नहीं किया जा सकता है।

**उप–परिकल्पना – 1.2**

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी संख्या – 3**

| छात्र | संख्या N | मध्यमान M | मानक विचलन SD | अन्तर की मानक त्रुटि SED | मध्यमानों का अन्तर D | स्वतंत्रता के अंश df | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अनु. जाति | 35 | 30 | 27.05 | 5.80 | 14 | 68 | 2.41** |
| अ.पि.व. | 35 | 16 | 21.14 | | | | |

*** 0.05 स्तर पर सार्थक**

**व्याख्या एवं विश्लेषण**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 30 व 16 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 27.05 व 21.14 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 5.80 तथा मध्यमानों का अन्तर 14 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 2.88 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60 से अधिक है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर पाया गया। अतः उप–परिकल्पना – 1.2 निरस्त की जाती है।

चूँकि अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान (16) अनु. जाति वर्ग के छात्रों के प्राप्तांकों के मध्यमान (30) से कम है। जो यह स्पष्ट करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति वर्ग के छात्रों का वृत्ति प्राथमिकता स्तर अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की तुलना में अधिक है।

**उप–परिकल्पना – 1.3**

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी संख्या – 4

| छात्र | संख्या N | मध्यमान M | मानक विचलन SD | अन्तर की मानक त्रुटि SED | मध्यमानों का अन्तर D | स्वतंत्रता के अंश df | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अनु. जनजाति | 35 | 33 | 27.38 | 5.85 | 17 | 68 | 2.91* |
| अ.पि.व. | 35 | 16 | 21.14 | | | | |

*** 0.01 स्तर पर सार्थक**

**व्याख्या एवं विश्लेषण**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 33 व 16 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 27.38 व 21.14 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 5.85 तथा मध्यमानों का अन्तर 17 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 2.91 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 68 हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.65 से अधिक है, अतएव दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर उपस्थित है।अतः उप–परिकल्पना – 1.3 निरस्त की जाती है।

चूँकि अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान (16) अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों के प्राप्तांकों के मध्यमान (33) से कम है। अतः यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों का वृत्ति प्राथमिकता स्तर अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की तुलना में कम है।

**लेखाचित्र संख्या – 1**

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

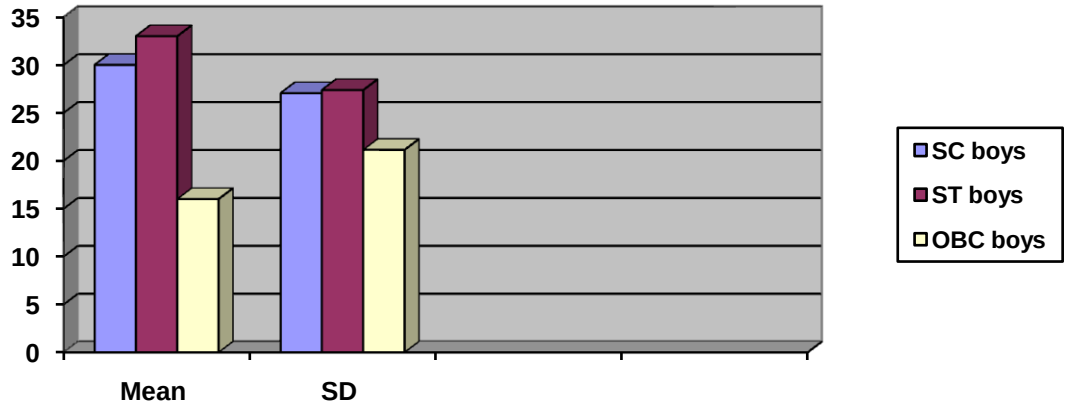


**परिणाम**

दत्त विश्लेषणानुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। जो कि अनु. जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों में क्रमशः सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 पर वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर के कारण है, अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों का वृत्ति प्राथमिकता स्तर अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की तुलना में कम है, जबकि अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के स्तर में समानता पायी गयी। हालांकि अनु. जाति वर्ग के छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान (30) अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों के प्राप्तांकों के मध्यमान (33) से कम है। लेकिन दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर है, वह संयोगवश ही है। उक्त अर्थापन इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग के छात्र वृत्ति प्राथमिकताओं के स्तर की दृष्टि से समान हैं, उनकी वृत्ति प्राथमिकताओं में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

**निष्कर्ष**

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की वृत्ति प्राथमिकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

**सुझाव**

1. आरक्षित वर्गों के छात्रों क्षमताओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए तथा वृत्ति प्राथमिकताओं के विषय

में उचित निर्देशन एवं परामर्श कक्षाओं की व्यवस्था करनी चाहिए ।

2. अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों के अभिभावकों में सजगता में वृद्धि की जानी चाहिए।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *गुप्ता एवं गुप्ता (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
2. *गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
3. *ठाकुर, हरिनारायण (2009), भारत में पिछड़ा वर्ग आन्दोलन और परिवर्तन का नया समाजशास्त्र, कल्पाज़ पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
4. *व्यास एवं गहलोत (2010), राजस्थान की जातियाँ और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।*
5. *शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
6. *हटन, जे.एच. (2002), भारत में जाति प्रथा (अनुवादित), श्री जैनेन्द्र प्रेस, दिल्ली।*
7. *जायसवाल, सीताराम (2008), शिक्षा में निर्देशन और परामर्श, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
8. *मंगल, अंशु एवं अन्य (2004), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।*
9. *शर्मा, आर.ए.(2008), वृत्तिक निर्देशन एवं रोजगार सूचना, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ।*
10. *Srivastava, R. (2008), Career Orientation in Relation to Caste and Religion Psycho-lingua 38(1).*
11. *Sharma, P. and Kumar, M. (2007), A Study of Vocational Interest of Rural and Urban Students, Indian Journal of Psychometry and Education, 38(2).*
12. *Pradhan, G.C. (2002), Factors Affecting Occupational Aspiration of College Youths, Journal of Educational Research and Extension, 39(1).*
13. *Yadav, R.K. (2000), A Study of Relationship between needs and Vocational Preference of Adolescents, Journal Educational Research and Extension, 42(2).*

**Websites**

14. *www.eric.ed.gov*
15. *www.scholar.google.com*
16. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*